उ.प्र. हिन्दी संस्थान द्वारा 'धर्मयुग सर्जना पुरस्कार' से सम्मानित

मूल्य : ₹ 50/-

निकट-44

वर्ष 20 – मई–अगस्त 2026

संपादक : कृष्ण बिहारी

निर्देश निधि का रचना संसार

संस्मरण

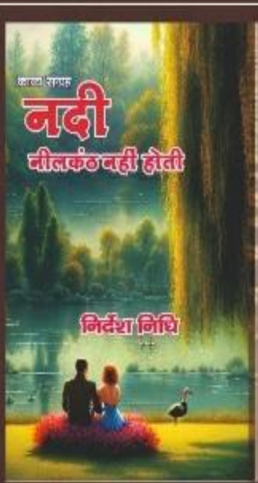

कविता संग्रह

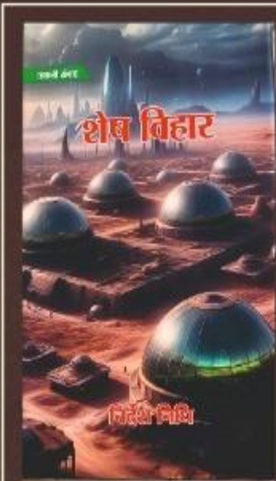

कहानी संग्रह

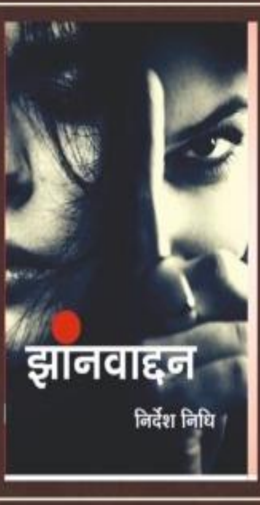

कहानी संग्रह

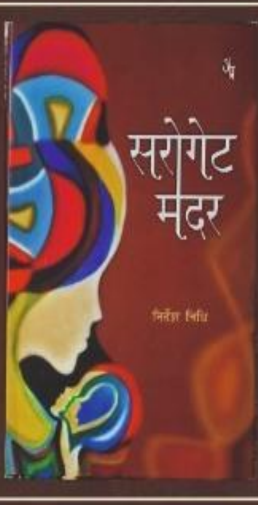

कहानी संग्रह

निकट

संयुक्त अरब इमारात से शुरू, अब भारत से प्रकाशित

कथा प्रधान साहित्यिकी, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा धर्मयुग सर्जना पुरस्कार से सम्मानित

वर्ष : 20, अंक-44, मई-अगस्त 2026

Editor: Krishna Bihari
HIG-46, B Block, Panki
Kanpur-208020
mobile: 6307435896
email: krishnatbihari@yahoo.com

प्रति रुपए 50/-
वार्षिक रुपए 500/-
तीन वर्ष रुपए 1500/-
(डाक खर्च अलग से)
भुगतान ऑन लाइन या सीधे बैंक में भी जमा कर सकते हैं :

बैंक : बैंक ऑफ बड़ोदा
खाता संख्या : 28050100010192
खाता धारक : Krishna Behari Tripathi
आई एफ एस सी : BARB0SAPRBS
बैंक शाखा : सराय मसवानपुर ब्रांच, कानपुर
उत्तर प्रदेश

6307435896@ybl

भारती भाषा संवर्धन संस्थान
द्वारा सहयोग प्राप्त

सर्वाधिकार : सुरक्षित
निकट से प्रकाशित सामग्री लेने के लिए लेखक और प्रकाशक की अनुमति आवश्यक है। प्रकाशित रचनाओं के विचार से संपादक और प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं। किसी प्रकार के विवाद लखनऊ न्यायालय में विचारणीय।
मुद्रक : अमन प्रकाशन, 104-ए / 80-सी, कानपुर, (उ. प्र.) मो.- 9044344050

निकट पत्रिका से संबन्धित सभी पद अवैतनिक
संपादक, स्वामी कृष्ण बिहारी, एच आई जी-46, पनकी बी ब्लॉक, कानपुर-208020 से प्रकाशित।

निकट

संस्थापक – अशोक कुमार

संपादक – कृष्ण बिहारी

उप संपादक

धनंजय कुमार सिंह

भूपेन्द्र कुमार सिंह

सहयोगी

राधेश्याम यादव

राम नारायण त्रिपाठी

व्यवस्थापक

अभिनव त्रिपाठी

कानूनी सलाहकार

राजेश तिवारी एडवोकेट

2/241, विजयखंड, गोमती नगर

लखनऊ

आवरण

डॉ. पारुल तोमर

रेखांकन

मॉर्टिन जॉन

अगला अंक निकट – 45

सितम्बर – दिसम्बर 2026

इस अंक में -

संपादकीय –

समय से बात : युद्धम् देहि कहे जब पामर... -03

पिछले अंक की प्रतिक्रियाएँ- -05

अनागत (कहानी) पर आई प्रतिक्रियाएँ- -10

कहानी -

बिना छत का मकान - नवनीत मिश्र -15

ये दरिया है प्रेम का - उर्मिला शिरीष -22

विशुद्ध - सुषमा मुनीन्द्र -26

मध्यरात्रि का कोरस - गोविन्द उपाध्याय -32

'चंद्रकांता की बेटी' - निर्देश निधि -36

अफ़सानानिगार - अब्दुल ग़फ़्फ़ार -43

मुखाग्नि - मीनाधर पाठक -48

हाँ..., यही प्यार है - डॉ. पूरन सिंह -52

चंचला, नदी और बेशर्म हवा - प्रियंका गुप्ता -55

दो पाटन के बीच में - अरुणेन्द्र नाथ वर्मा -61

कहते हैं मुझ से ये... - रत्ना श्रीवास्तव -65

हंसो - जयश्री पुरवार -71

ढाका की मलमल - कृष्ण बिहारी -75

संस्मरण -

घर के सिरमौर है 'बोतल पाम' - जयराम जय -82

व्यंग्य -

सर के सिर पर बीट - समीक्षा तैलंग -84

यू. ए. ई. से बच्चों की बातें –

अविका शर्मा, सान्वी साकेत पेंडसे, रीमा सिंह

गतिविधि -

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा उत्सव (AMBU 2026)

वैश्विक भाषाई चेतना का महाकुंभ - अचला भूपेन्द्र -88

कवितायें -

बुद्धिनाथ मिश्र, मनोज जैन 'मधुर ',

कौशल पांडेय

ग़ज़लें- राम नाथ बेखबर

समीक्षा –

जयराम सिंह गौर की पुस्तक पर मंजू श्री -91

प्रगति गुप्ता की पुस्तक पर सुधा जुगरान -93

महेंद्र भीष्म की पुस्तक पर पायल सोनी -95

युद्धम् देहि कहे जब पामर...

वार एंड पीस, क्राइम एंड पनिशमेंट, फ्रीडम ऐट मिडनाइट, ये किताबें मैंने पचास वर्ष पहले पढ़ीं। आज मैं इन किताबों की कथावस्तु से इतर इनके शीर्षकों पर सोचने के लिए विवश हूँ। क्या होता है युद्ध, क्या होती है शांति, क्या होता है अपराध, क्या होता है दण्ड, और क्या होती है मध्य रात्रि की आज़ादी ? सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलयुग तक के हुए युद्धों के बारे में मैंने पढ़ा है और अपने जन्म के बाद हुए युद्धों को होते हुए पढ़ा, महसूसा और देखा है। युद्ध के बाद शांति कब हुई है ? विनाश या महाविनाश को क्या शांति का नाम दिया जा सकता है ? मुझे नहीं लगता कि श्मशान की स्थिति को शांति कहकर मुक्त हुआ जा सकता है। जहां वैराग्य के जन्म का अंत तुरंत विस्मरण में बदल जाये वहाँ हलचल होती है, शांति नहीं।

विस्तारवादी कुटिलता को मैं अनीति और अधर्म की संज्ञा देता हूँ। गाँव, नगर, प्रदेश और राष्ट्रीय स्तर पर जिस तरह दबंग और बाहुबली होते आए हैं उसी तरह अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी महाशक्तियों की दबंगई बरकरार है। ताक़त के बल पर जनजीवन को बंधक बना लेने, अपने प्रभाव क्षेत्र को विस्तार देने की जो भूख आदमी के भीतर है उसे ख़त्म करने में अर्थशास्त्र का लॉ ऑफ डिमनिशिंग कभी काम नहीं आया। यह भूख जब शांत ही नहीं होगी तो फिर शांति की कल्पना या उम्मीद एक व्यर्थ की चिंता है। युद्ध विराम और समझौते समाधान नहीं होते। जियो और जीने दो एक दार्शनिक विचार है। व्यावहारिक रूप में इसका क्रियान्वन होता कहीं दिखाई नहीं पड़ता। भाई, भाई को और पड़ोसी, पड़ोसी को जीने दे रहा है ? परिवार जैसी संस्था तक तो इस भाव से अपरिचित है। अयं निजः परो वेति गणना लघुचेत्साम् उदार चरितानाम् तु वसुधैव कुटुंबकम् क्या सचमुच कहीं पर भी लागू है ! खुद को आदर्श का प्रतिरूप समझकर दुनिया को धोखा देना अनादि काल से चली आ रही वास्तविकता है।

उन्नीस सौ बासठ में मैं आठ वर्ष का था जब चीन ने भारत पर आक्रमण किया, क्या उसकी प्रवृत्ति आज भी बदली है ? पाकिस्तान ने पैंसठ, इकहत्तर, निन्यानबे और ऑपरेशन सिंदूर दो हज़ार पचीस में मुँह की खाने के बाद भी अपनी आदत छोड़ी ? इराक-ईरान, इराक-कुवैत, रूस-यूक्रेन, सऊदी-यमन और अब अमेरिका-ईरान युद्ध में कभी शांति का एहसास हुआ ? इसराइल और फिलीस्तीन को लड़ते हुए युग पर युग बीत रहे हैं , कहीं कोई समाधान मिला ? समझौतों पर समझौते हुए लेकिन फिर वही ढाक के तीन पात। ऊर्जा के केंद्र नष्ट किए जा रहे हैं। कहा जाता है कि रास्ता और पानी कभी भी किसी के लिए बंद नहीं करना चाहिए लेकिन अब यह भी हो रहा है। यह मनुष्य के शिक्षित होते जाने के बाद की दशा है ! आदिम युग और इस अत्याधुनिक कहलाने वाले युग की मूलावस्था में क्या कोई बदलाव हुआ ? एक से ढर्रे पर दुनिया चलती आ रही है। सीमाओं का अनैतिक अतिक्रमण कब रुका है। जो पीड़ित है , वक़्त बदलते ही वह पीड़क की भूमिका में आ जाता है।

39 दिनों तक चलते रहे अमेरिका-इसराइल वर्सेज़ ईरान युद्ध में पंद्रह दिनों के अल्प विराम में भी युद्ध बंद नहीं हुआ है। दोनों तरफ से वाक युद्ध लगातार जारी है। पाकिस्तान में हुई बैठक में भी तनातनी बनी रही और बिना किसी निष्कर्ष पर पहुंचे वार्ता समाप्त हो गई। प्रश्न उठता है कि यह युद्ध हो क्यों रहा है ? क्या यह युद्ध तेल के लिए है , क्या यह परमाणु बम न बनाने देने के लिए है , क्या यह ईरान में पैंतालीस साल से चले आ रहे धार्मिक कट्टरता पूर्ण शासन को समाप्त करने के लिए है ? कुछ समझ में नहीं आता। जब तेल नहीं था , जब यूरेनियम की खोज नहीं हुई थी और जब कभी कहीं धार्मिक कट्टरता से अलग उदारता पूर्ण शासन था तो क्या युद्ध नहीं हुए ? दुनिया की कूटनीति कुछ भी कहती रही हो , सामान्य आदमी अपनी सहज और सरल बुद्धि से इन प्रश्नों के उत्तर में केवल इतना ही कहता है – दुनिया को युद्ध में उलझाए रखने की कला में महाशक्तियों को महारत हासिल है। उन्हें अपने हथियार बेचने हैं। उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता कि उनकी इस पाशविकता से दुनिया किस तरह त्रस्त है। मानवता उनकी महत्वाकांक्षा के आगे बौनी है।

धरती, आसमान, हवा, और पानी प्रकृति ने जीव-जंतुओं को निःशुल्क दिया है। आज ये सभी बंट गए हैं। अपने-अपने देश के आसमान और समुद्र बंट गए हैं।

एक पौराणिक कथा याद आ रही है – बालक भोजराज को उसके चाचा मुंजराज ने बधिकों को जान से मार देने का आदेश दिया। बधिक बालक को जंगल में ले गए। उन्होंने बालक को मुंजराज का आदेश सुनाया। बालक भोज ने अपने खून से एक पत्र लिखकर बधिकों

को देते हुए कहा – इसे राजा मुंजराज को दे देना। बधिकों को बालक पर दया आई। उन्होंने उसे नहीं मारा। बदले में किसी पशु के खून से सनी तलवार राजा को दिखाई जो आदेश के पूरा होने का प्रमाण थी। उन्होंने बालक का लिखा पत्र मुंजराज को दे दिया। पत्र में लिखे एक श्लोक का भाव था – यह धरती राजा राम के साथ नहीं गई, धर्मराज युधिष्ठिर के साथ नहीं गई। लगता है यह आप के साथ जाएगी। पत्र पढ़कर मुंजराज को जीवन की निस्सारता और जगत की वास्तविकता समझ में आ गई। वह अपने भतीजे मुंज की हत्या का अपराधी मानते हुए रोने लगा। बधिकों ने प्राण रक्षा का वचन पाकर राजा को सत्य बताया और बालक को राजा के समक्ष ला खड़ा किया। मुंजराज ने वह साम्राज्य जिसे उसके बड़े भाई ने मरते समय यह वचन लेकर दिया था कि भोज के बालिग होने तक वह उसकी देखभाल करे और उचित समय पर सत्ता का निर्विघ्न हस्तांतरण कर दे। ख़ैर, अंततः मुंजराज ने दिया हुआ वचन निभाया। प्रश्न यह है कि क्या आज किसी को नश्वर जीवन के अर्थ से मतलब रह भी गया है ! होर्मुज को बंद करके दुनिया को बंधक बनाने वाले देश, निर्दोष बच्चों और नागरिकों को क्रूरता से मारने वाले देश क्या कभी पंडित नरेंद्र शर्मा की कविता की इन पंक्तियों का भाव समझ भी सकेंगे –

युद्धम् देहि कहे जब पामर
दे न दुहाई पीठ फेरकर,
या तो जीत प्रेम के बल पर
या तेरा पग चूमे तस्कर।

समय से बात

आपदा में अवसर तलाशना हो तो दुनिया को भारतीयों से सीखना चाहिए। जैसे ही युद्ध की ख़बर 28 फरवरी को जगज़ाहिर हुई और तेल और कुकिंग गैस पर आसन्न संकट की चर्चा शुरू हुई , आपदा में अवसर तलाशने वालों की बाँछें खिल गईं। कालाबाजारियों ने अपना कारोबार रातो-रात सुरसा के मुंह की तरह बढ़ा लिया। सरकार कहती रह गई कि अपने देश पर फिलहाल तुरंत कोई संकट इस मामले में नहीं है लेकिन कौन सुनता है। विपक्ष के भ्रामक दुष्प्रचार और तथाकथित बुद्धिजीवियों के टी वी विश्लेषण ने स्थिति को विकराल बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। हश्र वही हुआ जो कोविड के समय सबने देखा और भोगा। आपदा में मदद के बदले आपदा पीड़ित को लूटने का कारोबार इस देश के हर क्षेत्र में उस चक्रवात की तरह फैला है जो सिर्फ़ और सिर्फ़ विनाश का कारक होता है। युद्ध कब तक चलेगा, कब रुकेगा , दुबारा कब शुरू हो जाएगा ; इस संबंध में कुछ भी नहीं कहा जा सकता। केवल सोचा ही जा सकता है।

नोट :

निकट के आत्मकथात्मक प्रेम विशेषांक की खूब चर्चा हुई। कई अखबारों और पत्रिकाओं में भी अनेक आलेख और प्रतिक्रियाएँ भी प्रकाशित हुईं। लिखित रूप में इतनी प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हुईं जो उस वक़्त की याद दिला गईं जब किसी रचना पर पाठकों के पत्रों की झड़ी लग जाती थी। मैंने चाहा कि सभी प्रतिक्रियाएँ निकट के इस अंक में प्रकाशित करूँ और उन्हें कम्पोज़ भी कराया लेकिन पत्रिका के पचीस से अधिक पृष्ठ केवल इसी में लग रहे थे, इसलिए बहुत भी प्रतिक्रियाओं को इस अंक में नहीं दिया जा रहा है। अगले अंकों में प्रकाशित होंगी। सबसे अधिक प्रतिक्रियाएँ **'एक शिकायत विहीन प्रेम कथा – अनागत'** पर मिलीं। पाठक इस बात से भली-भांति परिचित हैं कि मैं पत्रिका में संपादकीय के अलावा कुछ नहीं लिखता। बीस वर्ष तो पत्रिका को निकलते हुए हो गए। सच तो यह है कि अपनी कहानी मुझे पत्रिका में इसलिए देनी पड़ी क्योंकि रचनाकारों के मन में यह भ्रम था कि शायद मैं उनसे उनकी सच्ची प्रेम कहानी मांग रहा हूँ। सुनने को यह भी मिला कि संपादक को पत्रिका में अपनी कहानी नहीं देनी चाहिए थी। चर्चा करने वाले को जानना चाहिए था कि ऐसा क्यों हुआ या फिर सत्य कि पत्रिका पाठकों की होती है, संपादक की नहीं। भविष्य में भी एक रचनाकार की हैसियत से मैं अपनी कहानियाँ निकट के अंकों में दिया करूंगा। पत्रिका का यह अंक कई कठिन परिस्थितियों के बीच भी समय से निकल रहा है, इसे मैं निकट के प्रति अपना समर्पण ही कह सकता हूँ।

“संवेदना के धरातल पर मानवीय रिश्तों का आत्मीय दस्तावेज़”

- डॉ पारुल तोमर

निकट पत्रिका (अंक-43, जनवरी-अप्रैल 2026) का ‘आत्मकथात्मक प्रेम कथा विशेषांक’ प्रकाशित हुआ है। यह पत्रिका अपने कलेवर और कथ्य में निरंतर प्रयोगधर्मी रही है। यह अंक केवल प्रेम कहानियों का संग्रह भर नहीं है, बल्कि यह प्रेम की उस आदिम और शाश्वत अनुभूति की पड़ताल है जिसे समाज अक्सर अपनी दुहरी नैतिकता के आवरण में छिपाने या कुचलने का प्रयास करता है।

“यदि प्रेम अनुचित है तो घृणा क्या है...” सम्पादकीय इस अंक की वैचारिक धुरी है। यह मात्र भूमिका नहीं, बल्कि एक दार्शनिक वक्तव्य है। सम्पादक ने बड़ी बेबाकी से यह प्रश्न उठाया है कि जिस समाज में घृणा, हिंसा और वैमनस्य को मौन स्वीकृति मिल जाती है, वहां प्रेम, जो कि जीवन का सृजन-तत्व है, अपराध क्यों मान लिया जाता है? स्त्री-पुरुष के प्रेम को नैतिकता के कठघरे में क्यों खड़ा कर दिया जाता है। प्रेम के ऐतिहासिक रूपों से लेकर आज के ‘टाइम पास प्रेम’ तक की यात्रा, संपादकीय को अत्यंत समकालीन और विचारोत्तेजक बनाती है। साथ ही, ‘समय से बात’ के अंतर्गत राजनीतिक टिप्पणियाँ यह स्पष्ट करती हैं कि ‘निकट’ प्रेम को समाज से काटकर नहीं देखता। प्रेम, राजनीति और लोकतंत्र तीनों एक-दूसरे से गहरे जुड़े हैं। संपादकीय केवल पढ़ने का ही नहीं, बल्कि सोचने और आत्ममंथन का अनुभव देता है।

सृष्टि उपाध्याय का आलेख ‘प्रेम की राह बड़ी अलबेली... सपनों सरीखी’ प्रेम की जटिलता, मासूमियत और उसके भीतर छिपी मानवीय सच्चाइयों को गहरे और सहज अंदाज़ में सामने लाता है। वे प्रेम को अंधा नहीं, बल्कि ऐसा अनुभव मानती हैं, जो हमें खुद से भी परिचित कराता है। आज के दिखावे और डिजिटल प्रेम के बीच, वह रिश्तों में गर्माहट, जिम्मेदारी और संवाद के महत्व को संवेदनशील ढंग से रेखांकित करती हैं। उन्होंने इस आलेख में साहित्य और ग्रंथों में वर्णित विभिन्न रचनाकारों के उदाहरणों के माध्यम से अपनी बात रखी है कि प्रेम हर सदी में एक जैसा रहता है बस परिभाषित करने के अंदाज़ बदल जाते हैं।

इस विशेषांक में कुल 14 कहानियाँ हैं। इस अंक की सबसे बड़ी विशेषता है, प्रेम कथाओं का आत्मकथात्मक आग्रह। सम्पादक ने परंपरागत प्रेम-कथा की जगह अनुभवजन्य, जीवन-स्पर्शी और साहसी रचनाओं को आमंत्रित किया है। पत्रिका के इस अंक की कहानियाँ समकालीन हिंदी कथा-साहित्य की संवेदनशील, आत्ममंथनशील और प्रयोगधर्मी प्रवृत्तियों को सशक्त रूप में सामने लाई हैं। ये कहानियाँ मानव मन की भीतरी परतों को उघाड़ती हैं। प्रेम के रूढ़िगत ढाँचों को तोड़ती हैं। कई कहानियाँ अतीत और वर्तमान के बीच आवाजाही करती हैं, जहाँ स्मृति कथ्य का केंद्रीय आधार बन जाती है। इनमें प्रेम, केवल संयोग और मिलन का नाम नहीं है, बल्कि यह वियोग, स्मृतियों और यहाँ तक कि मनोवैज्ञानिक जटिलताओं का भी एक कोलाज है...

अंक की शुरुआत प्रियंवद की कहानी 'उस रात की वर्षा में' से होती है। यह कहानी प्रेम से अधिक मानवीय मन की अतल गहराइयों और कुंठाओं का दस्तावेज है। कहानी का नायक एक स्त्री के साथ 'चरम सुख ‘ तक पहुँचने की एक सुचिंतित योजना बनाता है, जिसमें बारिश और शराब उत्प्रेरक की भूमिका में हैं। लेकिन कहानी का अंत पाठक को स्तब्ध कर देता है। स्त्री पात्र की मासूमियत और उसकी एक 'बच्चे जैसी जिद' नायक की सारी कुटिल योजनाओं को ध्वस्त कर देती है।

प्रियंवद की कहानी शत-प्रतिशत पुरुषों की उस मानसिकता को उघाड़ती है जो स्त्री को पाने के लिए कुचक्र को फैंटेसी में जीता है। स्त्री को दैहिक रूप में हासिल करना पुरुष का वह स्वप्न है जिसमें षड्यंत्रों की अंतहीन श्रृंखला समाज का सत्य है। प्रियंवद ने यहाँ प्रेम के शारीरिक और मानसिक द्वंद्व को बहुत ही सूक्ष्मता से उकेरा है।

‘मैं उस अग्नि में उतर जाती हूँ’ जया जादवानी की कहानी में लेखिका का एक ट्रांस जेंडर में पर काया प्रवेश है। यह एक ट्रांस जेंडर की मनोवैज्ञानिक पड़ताल है। एक ट्रांस जेंडर के मन में भी सेक्स की इच्छा होती है। इस कोमलता का चित्रण करना जया जादवानी के लिए आसान नहीं रहा होगा। जया जादवानी ने स्त्री की चुप्पियों, असहजताओं और साहस को बेहद संयत और मार्मिक भाषा में उकेरा है। महिला-अनुभव, इच्छाओं और सीमाओं के बीच संघर्ष की यह कहानी रिश्तों में शक्ति, आकर्षण और स्वायत्तता के सवाल उठाती है। पढ़कर देर तक मन में विचार चलते रहते हैं। प्रेम का अर्थ शरीर से आगे बढ़कर पहचान बन जाता है।

पंकज सुबीर अपनी किस्सागोई के लिए जाने जाते हैं। उनकी कहानी 'लाल कवेलुओं की छत' एक ऐसे प्रेम की दास्तान है जो समय की धूल में कहीं गुम हो गया है। कहानी का नायक वर्षों बाद उस कस्बे में लौटता है जहाँ उसने मोनिका एक्का से प्रेम किया था। 'लाल कवेलुओं की छत' और 'बोगनबेलिया के फूल' जैसे बिंब एक ऐसा दृश्यबंध रचते हैं कि पाठक उसमें खो जाता है। अंत में नायक का मोनिका एक्का की बेटी (जो अब डॉक्टर है) और बूढ़ी हो चुकी मोनिका से मिलना, समय की क्रूरता और प्रेम की असहायता को बड़ी मार्मिकता से दर्शाता है। यह कहानी स्मृति और बीते प्रेम का सुंदर कोलाज है। कथानक बहुत आत्मीय है। nostalgia पाठक को अपने अनुभव खोजने पर मजबूर करता है।